

१- वैसे लाली सुगल मर से, निमग्न यही सदा से है  
प्रजा है जबकि राजा से, तो राजा भी प्रजा से है

२- प्रजा राज का मूल है प्रजा राज का प्राण  
इसी प्रजा आधार पर खड़ा राज दखार

३- जब तो जल है भी काल सु-दर वसंत मृगु जाती है  
लक्ष्मी पर पड़ गयी ओस जब वृद्धावस्था जाती है  
सखी मतवाली रात गर्ह, जब गया चाँद का अजिमाला  
तमूना है राहु चन्द्रमा को, है ग्रहण पर्व लगने वाला  
वधो गरजा युद्ध स्थल में, वधो शिकार में मग्न रहा  
वधो तब देखे राज काज, महलों में बसा रहा  
जब साक डल डल झगड़ेदार, जली तलाश कर मुक्ती को  
नादान आज की लालच में, खोसा देल है पूँजी को।  
ये राज ताज पुत्रों को दे और वन में जाय तपस्या कर  
जब तक तो विषयानन्द रहे, जब ब्रह्मनन्द की चिन्ता कर  
सुमन्त जी मेरी स्तुति है कि अपने जेष्ठ पुत्र को अमोघ्या का  
राज्य देकर अपने पूर्वजों की भाँति वन में तपस्या के लिये  
चला जाँके

४- गुरुजी प्रणाम,  
महाराज उतरता जा रहा है आपका यह स्वतंत्र जवानी का  
देखिये स्वरूपा जा रहा है अपना यह स्वतंत्र ज  
है ब्रह्मचर्य को पूर्ण किया और रहे गरी के कार्यक्रम में  
जब प्यारण कर लें वानप्रस्थ, जाऊँ सन्यास की संयम में  
चिह्ने पुरुषों की नाद जब मुझे लपोवन जाते दें  
राजा के लायक राम हुये, जब ऊँ को राज चलाने दें

५- मन्त्रिज जब आप नगर की सफाई करवाए एवं राज्याभिषेक की  
सम्पूर्ण तैयारी करने की व्यवस्था करें। ताकि किसी भी प्रकार  
का व्यवधान न उत्पन्न हो

६- गुरुजी, राज को एक अनन्द राजा के भूमा गुण होते हैं वह  
किस प्रकार राज्य को चलाना चाहेंगे आदि कहेंगे उनको  
उन्हें सज्जमाने का कहेंगे।



⑧ हे प्राण प्रिया हे हे यह भ्या, बोले हो यह हाल वयो हे  
 वे वक्त फूल से गुम्फे डी बुरझा डुह रंगत वयो हे  
 वयो को पगवन में लेरी हो, वयो लकी तुम्हे मालूम न हे  
 जो तेरा प्राण प्रिया हे, कल उसी के अभिषेक का शुभ दिन हे  
 हे प्रिये, उछाड़ गुंग लो भयो हवली पर पड़ी करा हरी हो  
 कुछ दूरे हे, वयो कुछ सदगद, वयो माँझरी हे वयो घाँझरी हो  
 जिस आँख ने तुम्हे ज्ञाया हो वह आँख में सर से कटवा लो  
 जिस पुँव ने तुम्हें सखत कहा, वह पुँव दहन से कटवा लो  
 अच्छा यह सब जो दो, वतलाओ तुम म्यो रुयी हो  
 प्यारी-2 सो गन्ध बेरी, वतलाओ तुम वयो बोली हो

⑧ अन्धाय वही रूप करते हे, जो रूप मद में मतावाले हो  
 निविल को वे सुस देखते हे जो वल व दौलत वाले हे  
 पापी के हाँवो भवत दुारवी, हे प्रजा दुखी अन्धाय सी से  
 हे प्रजा दुखी अन्धाय सी से, गो माला हत्या काशी से  
 पुनः

को वर हो को ईच्छीज नही लो शोक से जितना जो चाहे  
 कुछ मुझे सार इनकार नही, ले लो जो भर्जो चाहे  
 गज जो दोर वरसे न वंद, यह सब फरेव मे जो मे हो  
 जो कहा-2 सो दिया-2, सह सक वात मदो मे हे  
 हे धर्म यही रघुवंशिन का जो कहो कर दिखलाते हो  
 फिर चाहे प्राण चले जाये फिर प्रण को नही गवाते हो

ज अगर सरकार ये सार ले मेरा सर आरवालो  
 पुर्वो से जो कैं अफ भी, पुर्वो मेरी कतरवा लो  
 मुझे जो लुई मे पिखा कर, ले लो निजलवा लो  
 प्रीति से हूँ जो मे, मुझे अगनि में जलवा लो  
 पुनः

आ काश के तारे चाहे हवली पर चले आये  
 हवली के जीव चाहे आकाश पा चढ जाये  
 भाषीक स मुकु में जो, पहाडी पर मगा जाये



परन्तु हम वो नहीं जो बातों से मुकर जाय  
मध्यस्थ मेरी वह का ये राज भजन हो  
साक्षी आकाश धृती वृषभ हो  
परमात्मा गवाह है विचलित नहीं होय  
क्षेत्री (कुमार धर्म से विचलित नहीं होगा)  
है आन पहली भर्तवा उम पात्र नाम की  
स्वाहा है तो सामने सांगित्य राम की

७) सब पुरुष पिता के हैं समान इस बार को रानी जानली है  
है भरत राम व एक मुझे यह तिरुवन नाथ साक्षी है  
पहली जो माँग तुम्हारी हो सो हुई नहीं हो भार मुझे  
लो भरत लाल का राज तिलक उड़ाह साहित स्वीकार कुंक्ष  
पर देश निकाला राम को हो, वह भी चौदह वंशों का  
इससे तुमसे क्या सोचा है समझा मैं नहीं इसारे का  
रानी ले भरत का राज तिलक, राम हम पर इतना अन्याय नहीं  
है राम गऊ व निर्योषी, उत पर यह क्रूर अपाध न कर

८) मेरा कुछ नहीं विगड़ता है, व मुझे न्याय लक्ष्मी हो  
रानी व अपने पैरों पर खुद आप कुल्हाड़ी मारती हो  
सुनली हो प्राण दे देंगे, पर क्यन न जाने देंगे  
हम सूर्यवंश के महलों में कालिमा न जाने देंगे  
जब तो कर्तव्य तबानू में, दशरथ का जीवन तुलना हो  
हो अपाध धर्म का वार रखा जो दुष्का प्रण मर्यादा  
अच्छा भी पाली निवाहूँगा जीवन की हो प्रत्याह नही,  
रघुवंशी है सत पत्र लक्ष्मी जिन की हो प्याह नही  
रानी - 2 अंचल पसार कपल भी ले, दान भी ले वरदान भी  
कोमल बारीश दोनो कुमार जो मित्र सुकुमारी हो  
मिस तरह पाँच चल सकते हो प्रेमी कमेर कमेर मारी हो  
इसलिये तार सुकुमारो को एव मे लँक कर ले जाना  
दो चार रोज दिवला का वन, साधही साध साधले के आभा  
वेला कम देश छोड़ते हो मैं आपसा पाठ छोड़ दूँगा



(तुम इधर अपोधा हो गये मैं ले इधर नेह छोड़ दूँगा)

(सुमन के लाल पर)

१- मन्ती मन्ती सत्य हो गये वनो को राग  
जब रहा साह भी आसरा जाल रहा तमाग  
जब लख गया, रघुवीर गये, सीता सुकुमारी साथ गई  
तन गया पाण भी चला गया, आबाम्नी गड़ साध ही में  
हलपरा चुके हैं लहोरे संसार जाल में फँसकर हम  
होते हैं सर से पाँव तक संसार सिन्धु में फँसकर हम  
आगे के पहले सोचा था, महेश्वर है, महेश्वर हो  
आगे के पहले दीख रहा, वस-पारो को अँधोराह

२- सुमन जो आप थोड़ा सा मुझे अग्नि लाकर दिजिए।  
आगे- आप धरराइये नहीं मैं आपने को जलाने के लिये  
मैं आप से अग्नि बड़ी माँग रहा हूँ।

३) दुष्टों के कभी उसी अग्नि को साक्षी मानकर मैं तो साथ  
आजीवन रहने की कसक खायी थी, लेकिन आज  
उही अग्नि देव की शोभ साक्षी बनकर मैं सौगन्ध खाऊँ।  
मैंने तुमसे अपना नाह ले ड़ रहा हूँ।

पुनः

प्रिय सुमन आप मुझे इस दुष्ट कंकरी के महल से निकालकर  
कौशिल्या के महल में ले चलो।

५) कौशिल्या से

प्रिय आज मैं तुम्हें अपने जीवन की मर्मन्तक  
कथा सुना रहा हूँ। जिसने मेरा सर्वस्व लूट लिया  
पुनः

६) शिव

जब मुझमें पूर्ण तरुणत्व था, था पौरुष में चढ़ा हुआ  
आखेट खेलने का भी था, उसाह ऊँटिनो पड़ा हुआ  
मृगया के पीछे एक दिवस, भग भूल गया आखिर मेरा  
पि रक्षा पतना हुआ कि, जिससे लूट लिया सर्वस्व मेरा।  
(शवरा बगर की रक्षा सुनाना)



मे अवधपुरी का दशरथ है, मेरा ही स्वर हुआ है  
हमारे चोखे पड़कर मेरे ही लुम्बो मारा है।

(फिर शिवन कहें कृष्ण)

राजा व राजा दशरथ है हो गया चन्द दशनि कर मे  
वह सार है चन्द आज जिससे, परलोक जा रहा है मरकर  
राज-शिकार के चोरों में हो गया, शिकार आए मेरा  
तो इसमें दोषी आप नहीं, का गया कल कलसर मेरा

(पुनः शिवन कहें कृष्ण)

अवधेश्वर शिवन काना यह, जग दो नौको का प्यारा है  
मैं वाप लूँ है अच्छे हैं, मेरा ही ठहरे सारा हो  
उनकी सेवा दित जीवन देकर, आज कृतार्थ हुआ है मे  
सचमुच था मेरा भाग्य प्रवल, जो आपसे मुझको मारा है  
अस परम पिता परमेश्वर से, है अन्तर्गत विन्द यह मेरी  
मैं वाप का भक्त सदैव वन, वरा यह ही लक्ष्य हमारा है  
इस लोते में जल भर करि, ले जाकर उसे पिला देना  
अब मृत्यु हमारी आ ही गई, इसमें नहीं दोष तुम्हारा है

पुनः

हे महामते हे महामते, मैं शिवन नहीं हूँ दशरथ हूँ।  
वह शिवन महा वड़ भागी था, मैं शक अभाग्य निराश हूँ  
सरयू तट पर मरा काण सेवक, मेरे शिकार के चोखे मे  
अपना ही पौत्र कुल्हाड़ी ह कर गया आज से चोखे मे  
(फिर शिवन ने पिता का श्राप सुना।)

हाथ-२ सुनता हूँ क्या, क्या जग में शिवन कुमार नहीं  
जब प्राण नहीं हो केह नहीं, जब देह नहीं संसार नहीं  
जल खाया है व जल जाये, निजलि ही प्राण खजे मे हम  
जिस जगह गया है राज पुत्र, व वही जगह पहुँचे मे हम  
दशरथ व श्या जल देता है, मत दे हूँ श्या वे छुलता है  
जीवन की मरण में भी जल देता ही दे सकता है।  
जैसा वही कर डाला है, जल छलमा मिलेगा आप तुम  
तुन ले ये कौशल के राजा, देता है अन्धारा श्राप तुम



जिस तरह दुष्टों में करता, यह अच्छा पुत्र चिन्तन में  
 क्यों ही विमोह में बैठे के ही, भोग व चोथे पन में  
 यह कहकर कौन शोकतुर होकर, रोता हुआ शिवन का नाम  
 मेरे ही कौनसे के समक्ष, वह अच्छा चला गया सुरदाव

(कि अच्छी का श्राव सुनाना)

व शिवन-२ है अच्छी का जिसको ऐसी ऐसी अच्छी भैया  
 गोपी रानी सुहाग रानी, रानी संसार दुःख देया  
 कानों को खोल आयो ध्यापते, सुन लो विलाप शुभ अच्छी का  
 व श्राव सुन चुका अच्छे का, कर गृहप्राप्त जब अच्छी का  
 मेरे उर में जा लगी आग, वह कभी न ठंडी होती है  
 मुझ पति पास खड़ी होकर, यह रात्रि निद्रा कहती है  
 पति का शव कर्म विहीन पत्र, यशस्व हो रही बालेरा  
 तेरी भी मिट्टी पड़ी रहे, जब आये अन्त कालेरा  
 व श्राव है कहती दुष्ट पुत्र व पति सुरेश  
 अच्छी भी सुरपुर गङ्गा, लगी न जाते देर  
 पुनः!

कोशिल्ये-२ देखो वह ब्याह, देखो वह ब्याह  
 कुछ नही कुछ नही कोछ नहीं वहम सा है  
 देखो कभी ये आत्मा, जब मेरे गमो कभी ही  
 कोशिल्ये-२ देखो, मुझको व पास लुलही है